# मनुष्य बनो

शरणागति

शुभ संकल्प,

क्षमा,

प्रेम,

पालन,

याल फकीर चन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजा )

# 'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि-कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—०० है।

—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

# मनुष्य बनो

वर्ष ३० | माघ सं० २०३६ वि० जनवरी, १९८० | संख्या ४

## सर्व व्यापक

तुम व्यापक चर और अचर में हो, किस जगह ढूढ़ने जाऊँ मैं ।
सब नाम और रूप तुम्हारे हैं, किस नाम रूप को ध्याऊँ मैं ॥१॥
तुम शब्द स्पर्श रूप में हो, तुम रस में हो तुम गन्ध में हो ।
तुम देश में काल में वस्तु में हो, तुमको क्या कहकर गाऊँ मैं ॥२॥
यह जीव जन्तु सत्ता हैं तुम्हारे, लोक परलोक सभी तुम हो ।
फिर किसको मन से छोड़ मैं, और किसको मन से पाऊँ मैं ॥३॥
अज्ञान में हो तुम ज्ञान में हो, विद्या में अविद्या में भी हो ।
किसको मैं मुँह से बुरा कहूँ, और अच्छा किसको बताऊँ मैं ॥४॥
कहने वाले में रहते हो, सुनने वाले में बसते हो ।
किससे मैं तुम्हारी दूँ उपमा, किस किसका भेद सुनाऊँ मैं ॥५॥
आकाश पवन अग्नि जल पृथ्वी, रूप तुम्हारे हैं स्वामी ।
स्वामी में सेवक में तुम हो, किस विधि से तुम्हें मनाऊँ मैं ॥६॥
राधास्वामी का रूप लखा, चेतन विशेष का दरस मिला ।
सामान्य को तज कर इस विशेष से, सच्चा नेह लगाऊँ मैं ॥७॥

—*—

# खुश खबरी

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी परमदयाल फकीर चन्द जी महाराज महर्षि शिवब्रत लाल जी की जन्म तिथि पर दिनांक १७ फरवरी, ८० को निम्नलिखित पते पर पधार रहे हैं।

अतः जिज्ञासू लोग उनके दर्शन एवं प्रबचनों से लाभ उठायें।

## सतसंग का समय

| | | |
|---|---|---|
| १७-२-८० | रविवार | सायं ४ से ६ बजे तक |
| १८-२-८० | सोमवार | सुबह ९-३० से ११-३० तक |
| | | सायं ४ से ६ बजे तक |

## महाराज जी के सतसंग एवं ठहरने का स्थान :

मेजर एस. डी. गोविला

इण्डेन गैस गोदाम

लेडी फातिमा स्कूल के थोड़ा सा आगे

व प्रकाश लाज के सामने

रामघाट रोड, अलीगढ़।

नोट :—बाहर से आने वाले सज्जन अपना बिस्तर साथ में लेकर आवें।

—सम्पादक

# परमदयाल फकीरचन्द जी का बसन्त प्रोग्राम

| चलने का दिनाँक | कहाँ से | कहाँ तक | पहुंचने का दिनाँक |
|---|---|---|---|
| १८-१-८० | होशियारपुर | दिल्ली | १९-१-८० |
| २०-१-८० | दिल्ली | हैदराबाद | जहाज से २०-१-८० |
| २९-१-८० | हैदराबाद | बम्बई | जहाज से २९-१-८० |
| ३-२-८० | बम्बई | इन्दौर | जहाज से ३-२-८० |
| ६-२-८० | इन्दौर | उज्जैन | ६-२-८० |
| ८-२-८० | उज्जैन | भोपाल | ८-२-८० |
| १०-२-८० | भोपाल | कटनी | १०-२-८० |
| १२-२-८० | कटनी | इलाहाबाद | १३-२-८० |
| १३-२-८० | इलाहाबाद | धाम | १३-२-८० |
| १६-२-८० | सायं धाम | अलीगढ़ (वाया इलाहा०) | १७-२-८० |
| १९-२-८० | अलीगढ़ | विलारी | १९-२-८० |
| २१-२-८० | विलारी | मोदीनगर | २१-२-८० |
| २३-२-८० | मोदीनगर | दहली | २३-२-८० |
| २५-२-८० | दहली | भीलवाड़ा | २६-२-८० |
| २८-२-८० | भीलबाड़ा | जयपुर | २९-२-८० |
| २-३-८० | जयपुर | अलबर | २-३-८० |
| ४-३-८० | अलबर | दहली | ४-३-८० |
| ७-३-८० | दहली | मथुरा | ७-३-८० |
| ८-३-८० | मथुरा | दहली | ८-३-८० |
| ९-३-८० | दहली | होशियारपुर | १०-३-८० |

## पार्टी का प्रोग्राम

| | | | |
|---|---|---|---|
| १९-१-८० | दिल्ली | काजीपेट | २०-१-८० |
| २८-१-८० | सिकन्दरावाद | दादई | २९-१-८० |
| २-२-८० | बम्बई सेन्ट्रल | रतलाम | ३-२-८० |
| ३-२-८० | रतलाम | इन्दौर | ३- |

# धन्यवाद

श्री रमेश चन्द्र शर्मा सीतापुर ने अपने पिताजी के स्वर्गवास पर
१) रु० मनुष्य बनो हेतु भेजे हैं। मनुष्य बनो परिवार कामना
रता है कि मालिक उनके पिताजी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे
वं उन्हें इस अपार दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

११) रु० श्री अमीचन्द, रायपुर वालों ने

१०) रु० श्री करनेल सिंह, फीरोजपुर केन्ट

११) रु० श्री रूपचन्द जटवानी गंगा नगर (राज०) से मनुष्य
ो की सहायतार्थ प्राप्त हुये है। हम सभी भाइयों के आभारी है।
मालिक से उनकी सुख समृद्धि की कामना करते हैं।

डा० मोहन लाल नैय्यर K–10, कीर्तिनगर, नई दिल्ली ने अपने
त्र डा० अमृत प्रकाश के शुभ विवाहोत्सव पर मनुष्य बनो की
ायतार्थ २१ रुपये भेजे हैं। मालिक से कामना है। कि वर–कन्या
सदैव सुखी, समृद्धि एवं दीर्घजीवी रक्खे।

# निवेदन

सभी ग्राहक भाइयों से निवेदन है कि 'मनुष्य बनो' का वार्षिक
अक्टूबर ७९ से ७ रुपये हो गया है। अतः सभी भाई जिन्होंने
तक अपना वार्षिक मूल्य नहीं भेजा है। शीघ्र भेजने की कृपा.
ाकि हम उनकी सेवायें करते रहें।

—प्रकाशक

# प्रवचन

परम सन्त परमदयाल पण्डित फकीरचन्दजी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर १४-४-७९

राधास्वामी ! मुझे याद आता है कि जब मैं आठ नौ दस वर्ष का था तो एक शब्द गाया करता था और कई बार इस गाने से मुझे मेरे बाप से थप्पड़ भी पड़े थे।

आई वैसाखी धूमाँ पईयाँ सौदागर घरीं आये नी।
सईयाँ ने रलमिल पैठे सीस अपने गुदाये नी।
कोई हिदायत खबर ले आवे, केहड़ा कासद जाये नीं।

अब मैं बयानवे साल का होगया। मैं, उस मालिक जो आधार है, उसका कोई नाम नहीं, सब नाम उसके हैं, जैसा किसी का विश्वास है, वैसा वह उसे याद करता है, उससे प्रार्थना करता हूँ कि ऐ परमतत्व आधार, दातादयाल ! आपने मुझे यह काम दिया था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं चालीस साल से काम करता आरहा हूं, मुझे पता नहीं कि मैंने अपने जीवन में ठीक किया है या गलत किया। आप लोग दूर दूर से आये हैं। मैं आपके आने को महसूस करता हूँ यद्यपि मैं यह जानता हूँ कि आप लोग सिवाय बिशेष विशेष आदमियों के, हकीकत, असलियत और सच्चाई जानने के लिए नहीं आये। कोई तमाशा देखने के लिए आया, कोई प्रेमवश आया और किसी को कोई संसारिक दुख है, वह आया।

मैं जिस चीज की तलाश करता था, मेरे अन्तर ही नहीं सबके अन्तर एक (Eraring) है। आदमी के अन्तर कोई ऐसी चीज है जो कुछ चाहती रहती है, कोई संसार चाहता है, कोई स्त्री चाहता

है, कोई धन चाहता है, कोई मुक्ति चाहता है, कोई शक्ति चाहता है और कोई नाम चाहता है। मेरे अहोभाग्य हैं कि मेरी (Eraring) उन सत्संगियों के कारण दूर हुई जिन्होंने अपने निजी अनुभव मुझे बताये कि मैंने उनकी सहायता की। मैंने जो कुछ भी कहा, वह अपने निजी अनुभव से कहा और शिक्षा को बदल चला हूँ।

जिस मालिक की मुझे तलाश थी, मैं अभी तक वहाँ नहीं ठहर सकता। सच्ची बात कहता हूँ। मगर मैं उस जगह और अवस्था को जान गया, समझ गया और कभी कभी वहां ठहरता हूँ। उस जगह की बाबत कबीर साहिब का शब्द सुनता हूँ।

घूंघट के पट खोल रे तोहि पीव मिलेंगे।

घर घर तेरा साईं रमता कटुक बचन मत बोलरे।

पहली शर्त तो यह है कि जो उसे मिलना चाहता है, वह कटु वचन नहीं कहेगा। जब तक वह कटु वचन बोलता रहेगा, वह उस दर्जे को प्राप्त नहीं कर सकता। तुम गृहस्थी हो बताओ तुम्हारे घरों में रोज झगड़े नहीं होते ? स्त्री पति को ऊटपटांग कह देती है, पति पत्नी को ऊटपटांग बोल देता है, लड़का बाप को कुछ कह देता ; बाप लड़के को कुछ कह देता है। जब तक किसी के मन की यह दशा है, वह कटु वचन बोलता है, वह चाहे बाबा फकीर नहीं, सारी दुनियां के बनाने वाले का चेला बनजाये, हजार नाम लेले, उसको वह चीज नहीं मिल सकती। एक मैं कबीर साहिब के कहने अनुसार और अपने निजी अनुभव के आधार पर मैं यह कहता हूँ।

उस चीज को प्राप्त करने के लिए जब तक घूंघट नहीं खुलेंगे चीज प्राप्त नहीं होगी। वह घूंघट क्या है ? जो हमारा असल में जो फकीरचन्द है या जो असल में तुम हो, उसके ऊपर गिलाफ हैं, वे गिलाफ क्या हैं ? कबीर साहिब का क्या भाव है, वह

घूंघट किस चीज को समझते हैं. मुझे पता नहीं। मैं घूंघट किस चीज को समझता हूँ ? शरीर और मेरे मन के सारे विचार, चाहे वे परमार्थ के हैं चाहे वे स्वार्थ के हैं अर्थात संसार के हैं। मेरे ये घूंघट कैसे खुले ? पहले तो बचपन से ही विचार था कि यह संसार नाशवान है, कोई अपना नहीं। पहली स्त्री पिंड दादन खान ( इस समय पाकिस्तान में है ) हस्पताल में रह कर मर गई। वैराग्य हो गया। गरीबी थी, बाप सिपाही था। बाप का स्वभाव कठोर था। तनिक सी भूल हुई नहीं कि थप्पड़ पड़े नहीं, इससे मुझे और वैराग्य हुआ प्रकृति मुझे अच्छाई या बुराई से, पता नहीं दाता दयाल के चरणों में लेगई। अगर मैं स्वयं पहले इन सन्तों को किताबें पढ़ता तो मैं हरगिज सन्तमत में न जाता। क्योंकि इन्होंने किसी धर्म पंथ किसी ख्याल वाले को बुरा नहीं हा बल्कि सब का खण्डन किया है। कबीर साहिब कह गये कि दतातरे नहीं पहुंचा, स्वामीजी ने कह दिया प्राशर नहीं पहुंचा, व्यास नहीं पहुंचा, वेदान्त सूफीवाद तथा इस्लाम सबका खण्डन कर गये जब मैं एक दृश्य द्वारा दाता दयाल के चरणों में गया था और आगे मुझे यह राधास्वामीमत या सन्तमत मिल गया तो मैं अन्तर बैठ कर रोया करता था और मालिक से प्रार्थना किया करता था कि मालिक मैं तो तुझे मिलना चाहता था। मैं कहां फँस गया जहाँ इन्होंने सब की ऐसी तैसी फेरी हुई है। मगर दाता दयाल से मेरा विश्वास नहीं टूटा क्योंकि मैं उनको अपने दृश्य द्वारा पञ्चमतत्व का अवतार समझ कर गया था और क्योंकि उन्होंने मुझे यह पंथ दिया था इसलिए मैंने उस समय प्रण किया था कि जो कुछ इस जीवन में सफर करके मेरा अनुभव होगा, मैं संसार को बता जाऊँगा। इसके अतिरिक्त दाता दयाल ने मेरे जिम्मे तीन कर्तव्य लगाये कि निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता करना, भवसागर से पार करना और जगत कल्याण करना।

जो आदमी उस घर जाना चाहता है उसके लिए पहली शर्त यह है जो कबीर साहिब ने कहा है।

'कटक वचन मत बोल रे'

तुम लोग इतना खर्च करके हैदराबाद, गाजीपुर, लखनऊ, कानपुर अर्थात दूर दूर से आये हो। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फकीर तू ने यह मकड़ी का जाला क्यों बनाया? ये मेरे खोटे कर्म थे। क्योंकि मैं जानता हूं कि जो कुछ मैं कहना चाहता हूँ संसार को इसकी आवश्यकता नहीं है। मेरे पास तो जितने आदमी आते हैं कोई संसार, कोई धन, और कोई कुछ चाहता है। वे यह भूल जाते कि यह संसार तो सराय है। कोई दस साल, कोई पचास और कोई सौ साल के लिये आया। यह देश हमारा नहीं है। यही दाता मुझे लिखा करते थे।

यह तो नहीं तेरा देश, देश है बेगाना।
यहाँ सब बेगाने बसें, कोई नहीं यगाना।
गुरु ने तुझे उपदेश दिया और तुझे चिताया।
सन्तमत पंथ बार हिये कटे मोह माया।

यह मेरी मोह माया नहीं कटती थी। एक आदमी मोह बश ने लड़के से प्यार करता है, स्त्री से प्यार करता है और एक मी गुरु से फकीरचन्द से प्यार करता है। मोह में कहाँ अन्तर ा? कोई पुत्र के मरने पर रोया, कोई स्त्री के मरने पर रोया कोई गुरु के मरने पर रोया। मैं पूछता हूं इसमें अन्तर क्या गुरु मानव का नाम नहीं है। कबीर साहिब जिन्होंने पंथ चलाया ो आद सन्त थे, वह कहते हैं।

गुरु को मानष जानते, ते नर कहिये अन्ध।
दुखी होंय ससार में, आगे यम का फंद॥
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नाहीं।
कहैं कबीर ता दास को तीन ताप भरमाई।

गुरु एक है। उसका नाम ज्ञान अनुभव, विवेक और प्रेम है
.न आज कल क्या है? तेरा गुरु कौन है? फकीरचन्द। तेरा
कौन है? अमुक। तेरा गुरु कौन है? अमुक। मैं यह साफ बात
कहता हूँ? जो लोग मुझे गुरु मानते हैं, उनको कहता हूँ ताकि
। आत्मा पर कोई धोखे देही का पाप न आये। कबीर साहिब
ते हैं अगर तुम वहाँ जाना चाहते हो तो घूंघट के पट खोलो।
खोलने से पहले शर्त यह है कि तुम्हारा कटुक वचन न हो।
। से रहो। जिस घर में मोयाँ बीवी की लड़ाई है, भाई भाई की
ड़ाई है, माता पिता की लड़ाई है, इन पार्टियों की लड़ाई है,
ग्रेस और जनता का झगड़ा है, जब तक यह नहीं जायेगा तो
नाश अनिवार्य है या और झगड़े इस देश से कभी नहीं जा सकते!
हीं जासकते !! इस वास्ते मैंने इस भेद को खोल दिया जिसको
बीर साहिब ने धर्मदास को बताया।

धर्मदास तोहि लाख दुहाई।
सार भेद बाहर नहिं जाई॥

मैंने वह सार भेद खोल दिया। स्वामीजी ने भी कहा—

सन्त बिना कोई भेद न जाने
वो तोहि कहें अलग में

इससे हानि भी है कि जो छोटी बुद्धिवाले हैं उनके अज्ञान का विश्वास टूटता है। मगर इसने तो आज भी टूटना है और कल भी टूटना है। तुम झूठ को कब तक छुपाते रहोगे। एक झूठ बोलोगे तो उसे सिद्ध करने के लिए सौ झूठ और बोलोगे। मैं तो चकित हूँ कि जो कुछ मेरे साथ बतौर गुरु हुआ, अगर यह ठीक है कि यही पिछले और मौजूदा सब गुरुओं के साथ बीता है और इन्होंने गुरु के रूप को पब्लिक को साफ नहीं बताया और हमें मूर्ख बना कर लूटा है तो ये दोषी हैं। मैं यह निर्भय होकर कहता हूं। अगर मैं गलत कहता हूँ तो हर आदमी को अधिकार है कि वह मेरा खण्डन करदे। मैं

कोई दावा नहीं करता हूँ कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है।

वे घूंघट के पट क्या चीज हैं? शरीर को भूल जाना, मन के सारे विचारों को भूल जाना। मैं इन्हें व दाता दयाल के रूप को नहीं भूल सकता था। उसे दूसरा समझता था मुझ पर यह दया आप लोगों ने की, जिन्होंने मुझे बताया कि मेरे रूप ने उनकी सहायता की। इस एक विचार ने मेरे मन के विचारों का घूंघट खोल दिया। जब से मुझे मन के रूप का पता लग गया तब से मन को छोड़ जाता हूँ।

मगर आप संसारी हैं। आप घूंघट के पट को खोलना नहीं चाहते। आप लोग तो इस घूंघट में आनन्द लेना चाहते हैं। इस वास्ते दो प्रकार की शिक्षा होगई। एक इस घूंघट में रहते हुए खुशी का जीवन व्यतीत करना और एक इस घूंघट को उतार कर के सदा के लिये अपने आप में चले जाना। अगर मैं सारी ही आध्यात्मिकता की बात कहूं तो ये मातायें और सर्व साधारण क्या समझेंगे जब तक तुम्हारा समय नहीं आया तब तक घूंघट अर्थात मन के विचारों में रहो मगर अच्छा घूंघट रखो, घूंघट को अच्छा बनाओ। आप आगे नहीं जाते कोई परवाह नहीं। हर चीज का समय है। घूघट को ठीक रखने का क्या भाव है? वेद मार्ग। शिव संकल्प अस्तु। अच्छा विचार रखो मन है तो घूंघट है। मुझे तो अब इसका विश्वास आवश्यक है।

जब तक इन्सान का सदाचार ठीक नहीं है, तुम कटु वचन नहीं छोड़ते, तुम्हारे घूंघट कैसे कटेंगे। भाषण देना एक और बात है किसी समय मैं गिर जाता हूँ अर्थात किसी समय मेरे मस्तिष्क में ऐसा विचार आता है जिसको मैं नहीं चाहता। जिस आदमी की जबान ठीक नहीं है, जिसके मन में प्रेम नहीं है, दिल में शत्रुता रखता है, किसी से घृणा द्वेष रखता है वह इस घूंघट को नहीं खोल सकता। जब तक उसे यह ज्ञान नहीं कि मेरे मन के अन्तर से

ो कुछ निकलता है, यह कल्पित और माया है। है नहीं परन्तु
ासता है तब तक भी वह इस घूंघट को नहीं खोल सकता. अब
मिल करना तुम्हारा काम है।

धन जोबन का गर्भ न कीजै झूटा पचरंग बोलरे।

एक शर्त तो य; है। जो आदमी उस मालिक को मिलना
चाहता है अर्थात अपने घर पहुंचना चाहता है उसके लिए ये शर्तें
आवश्यक हैं।

सुन्न महल में दियना बार रे, आसा से मत डोलरे।

वह कहते हैं सुन्न महल में, जहां मन संकल्प नहीं करता 'आसा
से मत डोल'। क्या भाव ? कोई आस न कर। बुरा तो नहीं मानोगे
सब संसार भक्ति करता है, पीछे से क्या कहता है ? ऐ मालिक !
मेरा अमुक काम होजाये, मुझे धन मिल जाये, मान मिल जाये।
आप बताओ ? तुम्हारे दरवाजे के सामने यदि कोई भिखारी आता
है तुम पैसा, दो पैसे या मुट्ठी आटा दे दो। मगर उसका कोई मान
नहीं करोगे, वह भिखारी का भिखारी रहेगा इस प्रकार तुम्हें बताये
देता हूँ कि हम जितने आदमी ईश्वर, परमात्मा या गुरू की भक्ति
करते हैं और कुछ चाहते हैं, कि हमारे लड़का होजाये और हमारे
यह होजाये। हम और तुम कौन हैं ? हम भिखारी हैं। भिखारी का
संसार में क्या मान इसलिये जो अपने इष्ट को इसलिये प्रेम करते
हैं कि उन्हें संसार की कोई वस्तु मिल जाये, वे भिखारी हैं। मैंने
दाता दयाल से अपने जीवन में दो वार के सिवाय कभी संसार की
चीज नहीं माँगी। एक बार लड़कों के लिए वर नहीं मिलता था
तब उनसे कहा था जब मेरा एक लड़का मर गया तो मेरी स्त्री दो
साल तक रोती रही, उस समय मैंने प्रार्थना की कि महाराज ! अब
कुशलता रहे। क्योंकि याद रखना जिस घर में स्त्री के आँसू वहते
है उस घर में शान्ति नहीं आती।

जोग जुगत से रंग महल में, पिया पाये अनमोल रे।

मैंने जितना बोला है, अगर इस पर ही तुम इकट्ठे बैठकर विचार करो तो तुम्हारे जीवन बदल जायें। विचार करो और अपने अमल को ठीक करो।

याद रखो, शब्द और अभ्यास ने तुम्हें पार नहीं करना बल्कि शब्द और अभ्यास करने के बाद तुम्हें किसी सत्गुरु ने पार करना है। शब्द और अभ्यास अन्तिम अवस्था नहीं है यह केवल मन को ठहराने, इकट्ठा करने, मन की चंचलताई को दूर करने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए है। सब से बड़ी खुशी यह है कि इन्सान अपनी जात में मिल जाये।

End if Sadhna is the realization of self

सन्तों का मार्ग तो केवल निवृतिमार्ग है ताकि हम इस संसार निकल जायें और फिर हमारा आवागवन अर्थात जन्म न हो। न्तों की जितनी शिक्षा है अगर उन्होंने खण्डन किया है तो इस ाव से किया है! अगर सभी को आध्यात्मिकता की आवश्यकता हीं है। इसलिये मैं आध्यत्मिकता के लिए संकेत करता हूँ। किसी आध्यात्मिकता नहीं मिल सकती जब तक उसमें मानता नहीं । हमारे देश और घरों में अशान्ति है। इस समय हमारे घर ान्ति के घर बने हुए हैं। मेरे पास दुनिया दुखों के कारण आती किसी का लड़का अच्छा नहीं है, किसी की लड़की खराब है : किसी का कोई दुख है। इसका जिम्मेवार कौन है? हम आप मैंने इसकी खोज की है। इसके बारे में मैंने पिछले सत्संग में कुछ कहा है। यह संसार संकल्पमय और मायामय है। जिस न की बुनियाद ठीक नहीं उस मकान की दीवारें अगर बनेंगी ल्दी गिर जायेगी। इन्सान की बुनियाद क्या है? बुनियाद मां हैं। जिस समय दोनों माँ बाप आपस में मिलते हैं उनके जो

विचार होते हैं उसके बच्चे की बुनियाद बनती है। इसलिये अगर संसार में सुख चाहते हो तो सन्तान को सन्तान के विचार से पैदा करो अच्छी सन्तान पैदा करो।

तुम लोग अभ्यास पर जोर मत दो। तुम्हें मैं साफ साफ कहता हूँ। अपने कर्म को ठीक करो। मैंने आजमाकर देखा है मैंने एक लड़का सन्तान के विचार से पैदा किया। मुझे बचपन से लेकर आज दिन तक थप्पड़ मारना तो एक ओर रहा, ओए कहने का अवसर नहीं आया। वेजबद होकर खुदराँ सन्तान पैदा मत करो। मैंने भी खुदरां सन्तान पैदा की मगर उस समय मुझे पता नहीं था। मालिक ने मुझ पर बड़ी कृपा की कि वह मरगई। मैंने जब देखा कि बड़े-बड़े महात्माओं का पिछला जीवन बहुत खराब रहा, सन्तान नालायक निकली, अपनी स्त्रियों से झगड़े रहे, कोई कैंसर से मरा, कोई टी बी, से मरा कोई सूली पर चढ़ा तो मैं सोचता हूं कि इन राम-राम जपने वालों को कष्ट हुआ. ये महात्मा, अभ्यास करने वाले, अपने कर्मों के फल भोगने से न बचे। इन्हें इनके अभ्यास ने कोई लाभ नहीं दिया तो मैं कर्म को ठीक करने पर अधिक बल देता हूं। तुम गृहस्थी हो, जीवन व्यतीत करने के लिए तुम्हें इस शिक्षा की आवश्यकता है।

सबको राधास्वामी।

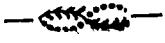

# प्रवचन

## परमसन्त परमदयाल पण्डित फकीरचन्द जी महाराज

## मानवता मन्दिर, होशियारपुर ता० १३-४-७९

राधास्वामी ! एक दिन पहले वह शब्द पढ़ा गया था जो दाता दयाल ने मेरे नाम लिखा था। उसमें लिखा हुआ है कि फकीर वह है जो आवद, महवूद और अवादत से निकल गया और वही दो जहाँ का पीर है। आप लोग कितनी कितनी दूर से कितना कितना रुपया खर्च करके आये हैं। मैं त्यप्रिय इन्सान हूँ। पहले दिन विचार आया था कि तू ने यह मकड़ी का ाला क्यों बढ़ाया ? वह दो जहाँ का पीर कैसे हो सकता है और वह क्या र सकता है ?

पीर गुरु को कहते हैं। दो जहाँ एक जाग्रत का खेल और दूसरा मन का ल है। उसे प्रकृति का ज्ञान हो जाता है। बिना कारण के कारज नहीं होता : एक चीज का कोई न कोई कारण (सबब) तो अवश्य है। पहले दिन मैंने ग्रत के खेल में, अपने जीवन के अनुभव और सत्संगियों के अनुभवों के धार पर कहा था कि सबसे पहले अपने स्वस्थ और मानसिक और शारीरिक चर्य का ध्यान रखो, और जहाँ तक हो सके जवान के चटखोर न लिए ा। जो भी आदमी समय से पहले अपने ब्रह्मचर्य को गलत ढंग से खोता सके भाग्य में रोना, दुखी होना, अशान्त होना और गुरुओं के पीछे फिरना लाजमी बात है। भक्ति कौन करता है ? जिसमें कमजोरी है। जब मैं ा लड़के को अज्ञान की भक्ति करते देखता हूं तो मैं तुरन्त समझ जाता हूँ सका ब्रह्मचर्य गिरा हुआ है और मेरा यह ख्याल बिल्कुल ठीक निकलता हम लोग ज्यादा अज्ञान की भक्ति करते हैं, ये सब लोग वे हैं जिनके र्य गिरे हुये और जिन्होंने अधिक विषय भोगा हुआ है। मेरे एक मित्र दातादयाल गिद्धड़वाहे में आये तो वह उनके पीछे ऐसा फिरता था तंग दीपक के पीछे फिरता है। मैं अपने मकान पर था। वह आया हने लगा कि मैं अशान्त रहता हूँ। मैंने कहा तेरा इलाज दातादयाल के

पास नहीं है। उसने कहा तुम कर दो। मैंने कहा दातादयाल के चोला छोड़ने के बाद करूँगा। जब फिर वह मेरे पास फरीदकोट आया तो मैंने कहा, तू बड़ा व्यभिचारी है उसे क्रोध आ गया। वह कहने लगा आप झूठ बोलते हैं, मैं अपनी स्त्री के अतिरिक्त किसी के पास नहीं गया। मैंने कहा—

"छुरी आई आपनी मारे दर्द जो हो"

अपनी स्त्री हो या दूसरे की स्त्री हो, वह हमारा (Social law) है। आप बताओ, आपका विवाह कब हुआ ? चौदह साल की आयु में। बीबी की आयु कितनी थी ? चौदह साल की कितना विषय भोगा ? वह कहने लगा, मैं हकीम था, दवाइयाँ खाकर खूब विषय भोगता था। मैंने कहा वह जो तुमने विषय भोगा हुआ है वह तुम्हारी अशान्ति का कारण है।

पिछले दिन कल जब यह शब्द पढ़ा गया था तो तुरन्त विचार आया था कि फकीर दो जहाँ का पीर हो सकता है तो तू बता तू दो जहाँ में किसी की क्या सहायता कर सकता है ? तू दो जहाँ का पीर कैसे हो सकता है ? सुनो ! इन्सान का बच्चा पैदा होता है। वह पैदा होते ही क्या चाहता है ? राम, राम या अल्ला अल्ला ? नहीं। उसको गुरसर चाहिए, खाने को कुछ चाहिए। अगर संसार में सुखी रहना चाहते हो तो सबसे पहलें प्राकृतिक धर्म यह है कि अपनी जितना हो सके कमाओ, बेकार मत रहो। अपनी कमाई किया करो। कमाओ और अपनी आर्थिक अवस्था को ठीक रखो। मुझे दातादयाल की एक घटना याद आती है। वह लाहौर में थे। एक फकीर भीख माँगने वाला जवान आया। उसने मत्था टेका। क्यों भई ! महाराज ! मुझे नाम दे दो। मैं वहीं था। दातादयाल ने कहा भाई ! मैं नाम दान देने की फीस लेता हूँ। अगर दे सकते हो तो नाम ले लो। महाराज ! कितनी फीस ? तीन सौ रुपये फीस है। उसने कहा बहुत अच्छा जी। वह चला गया। उसने, वह अपने साधुओं वाले कपड़े उतार दिये। एक लकड़ी के टाल पर कुल्हाड़ा लेकर लकड़ियाँ फाड़ना आरम्भ कर दिया। वह तीन साल तक काम करता रहा। तीन साल में उसने तीन सौ रुपये बचाये। वह तीन सौ रुपया लेकर दातादयाल के पास आया। उस दिन मैं भी वहीं था। वह कहने लगा महाराज !

रुपये लो और मुझे नाम दान दे दो। उन्होंने कहा बहुत अच्छा। उन्होंने उसे **Initiate** कर दिया। दस पंदरह दिन अपने पास रखा अभ्यास करता रहा। दातादयाल कहने लगे। यह अपना तीन सौ रुपया ले जाओ. विवाह कराओ, गृहस्थ का जीवन व्यतीत करो और साधन करते रहो। मैं आपको एक सच्ची मिसाल दे रहा हूं। अगर गृहस्थ साधन आत्मिक नहीं है तो फजूल। गृहस्थ में रहकर साधन करो।

दूसरे अपने विचार को ठीक रखो। दाता लिखा करते थे जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसे मती वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी। उनके ये शब्द हर एक किताब में लिखे हुये होते थे। विचार को ठीक रखने के लिए क्या करना चाहिए ? तुम घरों में प्रेम और शान्ति से रहो। अगर तुम्हारा अपने घर में प्रेम नहीं, पति पत्नी का प्रेम नहीं, बच्चे और बाप का प्रेम नहीं, उन्हें आज भी दुख आयेगा और कल भी दुख आयेगा अगर मैं किसी का नाम लेता हूँ तो उसे क्रोध आयेगा। मेरा एक मित्र था। वह अपनी स्त्री से सदैव झगड़ा किया करता था। उसकी स्त्री भी झगड़ालू थी। मैं क्योंकि उनके घर के हालात को जानता था। मैंने कहा विपत्ति आयेगी। उसका पति मर गया और वह पन्द्रह सोलह साल विधवा रही। अन्त में दिमाग ठीक न रहा समाप्त हो गयी। बुरे विचार का क्या परिणाम होता है। पता नहीं सच या झूँठ, शास्त्र कहते हैं जो स्त्री स्वप्न में भी अपने पति के साथ लड़ाई करती है वह दूसरे जन्म में विधवा होती है। यह पुराण कहते हैं। एक मेरा और दोस्त है। उसकी स्त्री और उसकी बहू की सारा जीवन नहीं बनी। उसका अठारह साल का पोता मर गया। उसका पोता एक ही था।

जो कुछ तुम सोचते, विचार करते, और किसी से द्वेष शत्रुता रखते हो उसका प्रभाव तुम्हारे ऊपर होगा। कोई नहीं रोक सकता। यह (Law of Nature) अर्थात प्रकृति का नियम है। क्योंकि विचार में शक्ति है इसलिए तुम्हारा विचार तुम्हें ले डूबेगा और जिसके विरुद्ध तुम सोचते हो उसे भी ले डूबेगा। अपने दिल को साफ रखो। उसमें काम का विषय या शत्रुता ईर्ष्या न लाओ।

यह सतसंग है। सतसंग से क्या मिलता है ?

बिन सतसंग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न होई॥

सतसंग से सच्ची समझ मिलती है। जिस घर में स्त्री पुरुष की नहीं बनती वहाँ कोई न कोई दुख अवश्य आयेगा कोई नहीं बचा सकता। कुछ इस जन्म के कर्मों का फल है और कुछ पिछले जन्म के कर्मों का फल होता है। तो हम सबको क्या करना चाहिए ? घरों में शान्ति रखा करो जिस घर में कलह है वहाँ सुख नहीं। मैं अपना अनुभव आपको बताया करता हूँ। मेरे ताये के लड़के की स्त्री मेरी स्त्री की सगी बहिन थी। उसका नाम ब्रह्नी था उसकी सास और वह दोनों आपस में लड़ती रहती थीं। मैंने कभी घर जाना तो मैंने कहना ब्रह्नईए ! कुछ होश की दवाकर नहीं तो दुखी होगी। मगर कौन सुनता था। उसके घर डाका पड़ा और डाकू सब कुछ ले गये। उसका पति मेरा भाई, ताये का लड़का पाँच साल दमा का बीमार रहकर मर गया उसे टी० बी० होगई। मैं अपना मुँह तो काला कर सकता हूं। मैं कई सतसंगियों के हालात को जानता हूं। अगर उनका नाम लूँ तो वे मुझे गाली निकालेंगे। अन्धे को अन्धा कहो तो उसे क्रोध आता है।

तुम्हारे विचार में बड़ी शक्ति है। तुम घरों में रोटियां पकाती हो, तुम्हारे दो महमान आ जाते हैं, स्त्रियें कुढ़ती हैं कि क्या मुसीबत आगई, रोटी पकानी पड़ी। जो उस रोटी को खायेगा वह बीमार हो जायेगा।

फकीर दो जहां का पीर कैसे हुआ ? वह ज्ञान देता है How to live अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करो। देश के बनाने वाली माताऐं हैं। जिस मकान की नीम Foundation कमजोर है उसके ऊपर मकान नहीं चल सकता। मां बाप के मिलते समय जैसे विचार होते हैं उनका थोड़ा बहुत प्रभाव बच्चे पर अवश्य आयेगा। मैंने अपने घर में आजमाया है। मैंने अच्छी संतान के विचार से एक लड़का पैदा किया था मुझे बचपन से आज दिन तक अवसर नहीं मिला कि उसे बुरा भला कहूँ, मारना तो एक ओर रहा। बाकी जो खुदरो सन्तान थी वह सब मर गई। मालिक ने मुझ पर दया कर दी।

होती थी। उसने दातादयाल को लिखा। दातादयाल ने कहा तुम्हें तुम्हारा पति वापिस किया जायेगा, सन्तान वाली होगी। दो चार साल इन्तजार करो। जो तुम्हें एक ताहना दे उसे सोलह ताहने गिनकर सुनाया करो चाहे फकीरचन्द भी क्यों न हो। अब यह भी कोई शिक्षा है। मगर सन्तों की यह शिक्षा है। जीवन का उद्देश्य, निडर और अडोल रहना है। यही गुरु नानक साहिब का मूल मन्त्र है।

सन्त मत का तात्पर्य तो केवल जन्म मरन से पार होना है। मगर परमार्थ या जीवन को बनाने के लिए तो कोई आता नहीं जब तक उसके लिए कोई आदमी मन से परे नहीं जायेगा उसका आवागवन नहीं छूट सकता। योग आदि सब मन से ही तो करते हो। मन से परे गुरु के चरण प्रकाश हैं। बाहरी गुरु के पांव धोने से तुम पार नहीं जा सकते। वह तो केवल एक मन का बुलबुला है आया और चला गया। सन्तों के मार्ग में प्रकाश का साधन है और सनातन में यही गायत्री मंत्र का साधन और सावित्री के दर्शन हैं।

आज मैंने अपने आपको पूछा कि तू दो जहां का पीर है ? हां ! क्यों ? कैसे ? मैंने समझ लिया कि विचार की शक्ति है। कुछ पिछले जन्म के कर्म कुछ हमारी विचार शक्ति जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति। दातादयाल ने मुझे शिक्षा बदलने की आज्ञा दी थी। आप लोग दूर २ से आते हैं। मैं एक बड़ी जिम्मेदारी महसूस करता हूं। अगर मैं अपनी नीयत को साफ रखकर यह बात नहीं कहता जो मेरा कर्तव्य है तो मैं अपने आपको दोसी समझता हूं। मैं दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है मगर मेरे अनुभव में जो सच्ची बात आई है वह मैं बताता हूँ।

मैंने यह काम क्यों किया ? अपने जैसे मूर्ख गृहस्थियों को समझाने के लिए कि तुम लुट न जाओ। इन गुरुओं, महात्माओं, देवी देवताओं ने हमें मूर्ख बनाकर लूटा है। आजकल गुरुओं ने क्या प्रचार किया हुआ है ? नाम लो, गुरु ने तुम्हारे सारे पाप ले लिए। गुरु अन्त समय तुम्हें सतलोक पहुंचा देगा। एक ओर फिरका निकला है। वह कहता है किसी की स्त्री हो, गोमांस खाओ, शराब पीओ जो इच्छा करो। न कोई चार सौ बीस है और न

तुम में नौजवान बच्चे होंगे। लोगों की बातें सुन सुन कर तुम उनके पीछे फिरते हो। तुम्हारा कर्तव्य और जवान का कर्तव्य और बूढ़े का और स्त्री का कर्तव्य और है। हाथी के लिए अंकुश चाहिए, गधे के लिए डन्डा, घोड़े को लगाम और ऊँट को नकेल चाहिए। सारे आदमियों के लिए एक ही-बात नहीं है। इस वास्ते हमारे यहाँ गुरू की पूजा है। ऐसा नहीं कि उनके सामने आरती करते रहो बल्कि गुरू की बात को समझो और उस पर अमल करो जब तुम्हारा कल्याण होगा। यह बिल्कुल सच्ची बात है। मगर क्या मन को वश करना हमारे आधीन है यह एक समस्या है।

संसार में रहने के लिए मैंने आपको प्रवृत्ति मार्ग में बता दिया कि तुम्हारा विचार काम करता है। विचार के अन्तर नीयत होती है। अपनी ज्ञात के लिए किसी के साथ हेरा फेरी धोखा फरेब मत करो। घरों में शान्ति रखो। प्रेम और सच्चाई से रहो। आजकल बहुत लड़के लड़कियां मांगलीक पैदा होते हैं। पहले जमाने में बहुत ही कम होते थे। ये क्यों होते हैं ? क्योंकि जब पति पत्नी आपस में मिलते हैं तो उनके दिल मिले हुए नहीं होते, बच्चा पेट में आ जाता है। वे बच्चे मांगलिक होंगे। तुम बूढ़े हो गये हो। तुम्हारे सात सात नौ नौ बच्चे हैं फिर भी तुम विषय भोगने से बाज नहीं आते। इसका जिम्मेवार कौन है ? तुम आप हो।

जहां काम तहां नाम नहीं, जहां नाम वहां नहीं काम।
रवि रजनी दोनों न मिले, एक ठोर एक याम॥

यह बिल्कुल सच्ची बात है। इसलिए मैं कहता हूँ कि इन्सान ! अपनी नीयत को साफ रख, अच्छा विचार रख। लोक लाज में मत आओ। तुम करज (ऋण) उठाकर लड़कियों का विवाह करते हो। तुम दुखी होते हो। ऋण तुम्हारे सिर पर होता है। तुम समझते हो कि जो दान तुमने लड़की को दिया है वह उसे लाभ पहुँचायेगा। बिल्कुल नहीं।

विचार में बड़ी भारी शक्ति है। मैंने स्वयं अजमाया हुआ है। मेरी स्त्री स्वयं Self respect वाली थी। अगर किसी ने कुछ कह दिया तो दुखी

आप देखते हो देश में क्या हो रहा है। यह क्यों हो रहा है ? क्योंकि हम जितने आदमी सिवाय विशेष के हैं ये सब खुदरो सन्तान हैं, वेजवत हैं। क्योंकि हम वेजवत होकर अपने स्वाद के लिए स्त्रियों के पास गये, बच्चे पेट में आ गये। फिर तुम कैसे आशा कर सकते हो कि वे बच्चे तुम्हारे किसी काम आवेंगे या देश को लाभ पहुँचायेंगे। बिल्कुल असम्भव है।

मैं आध्यात्मिकता के बारे में कल कहूंगा। आज आपको संसार के बारे में कहता हूँ। विचार में बड़ी शक्ति है। अपने बच्चों को सदा अच्छा विचार दो। मुझे यह अनुभव दातादयाल ने सिखाया था। एक बार उनका दो तीन साल का दोहता खेल रहा था। मैंने कहा तू बड़ा गन्दा है। मुझे अन्दर से दाता दयाल की आवाज आई, फकीर ! ऐसा नहीं कहना, तुम्हारे ख्याल का प्रभाव बच्चे पर जायेगा इस वास्ते निन्दा नहीं करनी चाहिऐ।

मत देख पराये औगण क्यों पाप बढ़ावै छिन छिन।
मक्खी सम मत करे भिन्न भिन्न यह बात कही मैं चुन चुन।
नहीं तो रोओगे सिर धुन धुन ॥

ऐसी २ वाणियां हैं। जो आदमी दूसरों के ऐबों को देखता रहता है या तुम घरों में रहते हो सास बहू का झगड़ा है, भाई भाई का झगड़ा है उसे स्वयं भी शान्ति नहीं है। और दूसरों को भी शान्ति नहीं है। इस वास्ते सदा अपने विचार को ठीक रखो।

यह नामदान केवल उनके लिए है जिनका मन काबू में नहीं है। एक आदमी दो घन्टे समाधि लगाता है, सारा दिन उसका मन उसके कन्ट्रोल में नहीं है जो इच्छा करे करता फिरे, उसे दो घन्टे की समाधि का कोई लाभ नहीं है। इसलिए स्वामी जी ने लिखा है कि मन की निरख परख किया करो। आजकल हर आदमी को नाम दिया जाता है जो कि एक गलती है। नाम हर आदमी के लिए नहीं है। मेरा छोटा भाई सातवीं कक्षा में पढ़ता था अपने आप ही लाहौर भाग गया। वहां से नाम ले आया। दातादयाल ने नाम दे दिया और कहा तुमने नाम को नहीं जपना। तुझे क्या करना है ? Life means work and work means life. काम करो।

धोखा फरेब है। लोग कहते हैं, ये गुरु सतलोक गये होंगे। मैं कहता हूँ जो कुछ मैंने समझा है और यही इनकी समझ में आया है और इन्होंने परदा रखा है तो ये कहीं घोर नर्क में होंगे। आध्यात्मिकता के बारे में कल बोलूँगा। सबको राधास्वामी।

—०—

# ईश्वर सर्वव्यापक

नहीं सिर्फ शहरों में तू कूबकू है,
जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है ॥१॥
मेरे दायें बायें मेरे आगे पीछे।
मेरे साथ में है मेरे रूबरू है ॥२॥
मेरी साँस साँस और दम का हमदम।
मेरी जान तन है मेरे दूबदू है ॥३॥
है कसरत में बहदत में खिल्वत में जाहिर।
बनों का है बातिन तुही मूबमू है ॥४॥
खियाबाने गुलशन में है तू तरावत।
नमू वर्ग में और फूलों में बू है ॥५॥
तेरी ही है रग रग में रेशा रबानी।
तू खुद मैं में मैं है तू ही तू में तू है ॥६॥
अगर नैकदे का है पीरेमुगा तू।
तो तू मैं है और जाम मीना सुबू है ॥७॥
राधास्वामी ने मुझको बताया।
तेरी जाँ की जाँ है तेरी रूह की रूह है ॥८॥

# सच्चा यज्ञ

[गतांक से आगे]

१. दया धर्म गह लीजिये, यही वस्तु है सार।
दया धर्म का मूल है, साधो ! करो बिचार ।। १ ।।
२. साधो करो विचार, मनुष देही जो पाई।
वृथा जन्म गया बीत, जा मन में दया न आई ।।२।।
३. जब लग स्वांसा पिंड में, करले पर उपकार।
दया धर्म गह लीजिये, यही वस्तु है सार ।।३।।

—०—

१. लेना हो सो जल्द ले, अवसर जासी चाल।
अवसर के चूके नरा ! मारै काल कराल ।।१।।
२. मारै काल कराल, फँसावै यम की फाँसी।
बिगड़े अपना काम, होय जग भीतर हाँसी ।। २ ।।
३. दया राखिये चित्त में, कीजै दुखी निहाल।
लेना हो सो जल्द ले, अवसर जासी चाल ।। ३ ।।

—०—

दृष्टान्त (५)—नौशेरवाँ फारिस का बादशाह था। उसने किसी गाँव में अपना महल और बाग बनवाया। महल से मिला हुआ क विधवा बुढ़िया का झोंपड़ा था। उसके रोटी पकाने से बादशाह ी सदर बैठक धुयें से काली होगई, वजीरों ने बुढ़िया को बहुत मझाया कि रुपया लेकर अपना घर छोड़ दे परन्तु उसने एक न ानी जब नौशेर ाँ ने सुना उसने कहा, 'जाने भी दो ! वह झोंपड़ा ढ़िया का बहुत पुराना है। उसे अधिकार है कि वह बेचे या नबेचे। दबाब डालना नहीं चाहता।' एक दिन रोम के बादशाह का एक ाजदूत बादशाह से मिलने आया। उसने बाग और महल की बड़ी

प्रशंसा की परन्तु काली बैठक को देख कर उसने घृणा प्रकट की। नौशेरवाँ हँसा, 'यह धुआँ जो इस बुढ़िया के झोंपड़े से निकलता है इस बैठक को अत्यन्त सुन्दर और शोभायमान बनाता है। इसकी स्याही से मेरी प्रशंसा लिखी जारही है जो सदैव बनी रहेगी और लोग विचारेंगे कि नौशेरवाँ ने बादशाह होकर भी बुढ़िया के साथ अन्याय और अत्याचार नहीं किया।' राजदूत बोला, 'आप धन्य हैं! आप जैसा बादशाह होना महा कठिन है।"

यह सच्चा यज्ञ है।

जीवन का नियम और धर्म यह होना चाहिये कि वह औरों के काम आये। जो दूसरों के लिये जिया उसका जीना, जीना कहलाता है। जो केवल अपने लिये जिया उसका जीना मृत्यु से भी कहीं बुरा

---

# संसार कल्पित है

फिर वही बात आई। जो कुछ है भावना और कल्पना (खयाल) ही है। इसे मेट दो, कहीं कुछ नहीं यह संसार जो भासता है और जिसमें हम फँसे हैं वह क्या है कल्पना ही तो है। संसार वास्तव में और कोई वस्तु नहीं है, इसका स्थूल रूप मेरा तेरापना है। जिसको तुम मेरा कहते हो उसी से बँध जाते हो जिस को तेरा कहते हो उससे दूर भागते हो! एक मन की वृत्ति है। उस के दो रूप हैं— एक 'मेरापना' और दूसरा 'तेरापना' इसे कोई विरला ही जानता है नहीं तो सब इसी में फँसे हुए दुख और कष्ट भोग रहे हैं। फिर भी इससे छुटकारा नहीं चाहते। मनुष्य को चाहिये कि इन दोनों को

तोड़ दे परन्तु यदि वह इनमें से किसी एक को प्यार करता है तो उससे छुटने की दो युक्तियाँ हैं—एक तो इस प्रकार 'मेरा मेरा' करना जिससे 'मेरेपने' का अन्त होजावे दूसरे इस प्रकार 'तेरा तेरा' करना कि वह यह वृत्ति भी अन्त को पहूँच जाये आदि और अन्त में बन्धन नहीं है। वन्धन केवल बीच में है। बीच को अवस्था को यदि तुम लांघ जाओगे, स्वतन्त्रता और मुक्ति की दशा में पहुंच जाओगे। यह हम तुमको सहज युक्ति बताते हैं। हम उस मनुष्य को गौरव की दृष्टि से देखते हैं जो साधारण रीति से जगत का व्यवहार करता हुआ जीवन की अनेक अवस्थाओं को लाँघता जाता है। एक न एक दिन वह आप किनारे पहुंच जायेगा परन्तु यदि धैर्य नहीं है तो फिर 'मेरापना' और 'तेरापना' का अन्त कर दो जिसमें इसका भी परिणाम देखने में आये। यदि इसी 'मेरे तेरे पने' से गहरा सम्बन्ध तब भी कुछ हर्ज नहीं इसको और भी गहिरा और घना करलो फिर आप ही असलियत को जान लोगे।

जीव—आप यह क्या कह रहे है? आप तो उलटे और फँसाने को शिक्षा दे रहे हैं। आपको इसके विरुद्ध कहना चाहिये।

शिव—हाँजी हाँ! हम फँसाने ही की युक्ति बताते हैं। जब तक कोई भली भाँति फँसेगा नहीं तब तक मुक्ति का विचार उसके मन में धँसेगा नहीं। यदि फँसना है तो अच्छी तरह से फँसो जिसमें इसका कुछ फल भी हो यों ही क्या कर रहे हो?

जीव—यह उलटी बात है।

शिव—उलटी नही, बात तो सीधी है परन्तु तुम्हारी समझ में कठिनता से आती है। तुमने बीच में रोक दिया नहीं तो हम बड़ी तमता से समझा देते।

जीव—बहुत अच्छा! भूल होगई। क्षमा कीजिए। अब आप हते चलिये। मैं ध्यान के साथ सुनता चलूँगा।

शिव—सुनो ! या तो ऐसे बनो कि मेरा तेरा पना तुम पर अपना भाव न डाल सके और यदि मेरा तेरा पना करना ही है तो उसको आधा तिहाई न करो। पूरा पूरा करो। बात तो यों है—

मोर तोर की जेबरी, बट बांधा संसार।
दास कबीरा क्यों बँधे, जाके नाम अधार ॥

दूसरी बात यह है—

तू तू करता तू भया, मुझ में रही न हूं।
वारी तेरे नाम की, जित देखूँ तित तूँ ॥

दो होगईं अब तीसरी सुनो—

मैं मैं करता मैं भया, मुझमें रही न तूँ।
बारी अपने रूप की, जित देखूँ तित हूँ ॥

अब तुम समझे कि नहीं ?

जीव—अब तक नहीं समझा। आप पहेली बुझाते हैं। मैं इसको कैसे समझूँ।

शिव—सुनो ! बात तो सीधी है परन्तु वास्तव में कठिनाई से समझ में आती है। पहली अवस्था परमहसों की है जिनमें मेरा तेरा पना नाम को भी नहीं होता। इनकी सहज वृत्ति होती है। दूसरे लोग जो 'तेरा तेरा' करते रहते हैं वह भक्त जन हैं। उन्हें भगवन्त के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं देता, यहाँ तक कि वह अपने अंग को भी उसी का रूप समझते हैं।

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागेगा मोर ॥

इनकी दृष्टि में वही एक 'तेरा तेरा' और 'तू तू' करते रहना बस जाता है उन्हें और कुछ भी दिखलाई नहीं देता।

यह 'तू तू' करने का मार्ग है। जितना जी चाहे दिल खोल कर 'तेरा तेरा' करो। जहाँ विचार में दृढ़ता आई चित की एकाग्रता से सार वस्तु का ज्ञान आप ही आप होने लगेगा। यह पंथाइयों का

मार्ग है और सुगम है। तीसरे यदि 'मैं मैं' करना है तो ज्ञानियों के मार्ग पर चलो। 'अहंब्रह्म' कहते हुए दिल को उभारते चलो तब तो बात है। जिसमें लगे सच्चे होकर लगो। आधा तीतर आधा बटेर ठीक नहीं। भक्ति और ज्ञान दोनों का आदर्श एक है। अपने मन के भाव को देखकर जो तुम्हें रुचे उसी से लौ लगाओ! हमें तो पंथाइयों का मार्ग अच्छा लगा उसी के प्रेमी हैं। वह चित्त को भा गया उसी से शान्ति मिलती है परन्तु हम यह नहीं कहते कि सब लोग इसी मार्ग पर चलें।

जा का जासे मन रमा, ता को ता से काम।
सकल बासना त्याग कर, जपिये गुरू का नाम।।

ऊपर जो कुछ हमने लिखा है उसका तात्पर्य केवल यह है कि यह संसार कल्पित है। यदि इससे घबराहट नहीं है तो फिर शिक्षा और उपदेश की आवश्यकता भी नहीं है। कोई न परमहंसों को शिक्षा देता है और न संसार में लम्पट मनुष्य को। इन दोनों को इसकी आवश्यकता नहीं। अब रहे द्विचिताई वाले। इनको दुःख है और यह शिक्षा पाने के अधिकारी भी हैं। यदि किसी में 'तेरा पना' का भाव दृढ़ है तो वह मालिक से 'तेरे पने' का नाता जोड़े और उससे मिल कर सुख रूप हो जाये। यदि 'मेरेपने' की ओर ध्यान है तो सबका त्याग करे और ज्ञान को समझ लेकर त्याग करते हुए अपने रूप को पहिचान कर सुख रूप बने। सुख रूप तो पहिले हो रहा है, केवल द्विचिताई का भ्रम है जिससे दुख पारहा है। यह द्विचिताई जब तक न छूटेगी भ्रम दूर न होगा और भ्रम के दूर न होने से अपने रूप के सुख का भान न होगा अपनी निबल भावना को सबल भावना से परास्त करो और इसके लिये केवल यही दो ढंग हैं यदि कोई तीसरा हो तो हम उसे नहीं जानते।

अब संसार के कल्पित होने का दृष्टान्त सुनो।

---

# जादू का पिटारा

विराट् सभा (दरबार आम) का दिन था, मन्त्री, दीवान छोटे नौकर चाकर सब प्रस्तुत थे। राजा ने आज्ञा दे रक्खी थी कि येक मनुष्य मेरे पास पहुंच कर अपनी आवश्यकता प्रगट करे। ई नौकर चाकर किसी के साथ कोई रोक टोक न करे, जिसको कुछ कहना सुनना हो वह पूरी स्वतन्त्रता के साथ अपने आप जा को सुना दे ताकि वह उनका न्याय करे। सिंहासन के ऊपर राजा बैठा हुआ था, दाहिनी ओर मंत्री की कुरसी थी, बाईं ओर नापति की कुरसी थी। लोग बारी बारी आकर राजा को अपना ाल सुना रहे थे और वह हँस हँस कर उसका न्याय करता था और उनको सन्तुष्ट करता जाता था। उस श्रेष्ठ राजा ने कितने ही आत्माओं को प्रसन्न किया, कितने सताये हुए दुखियों ने उसको अशीषें दीं।

सिंहासन से थोड़ी दूर पर एक मनुष्य मैले कुचैले वस्त्र पहिने हुए खड़ा था और राजा की मुख की ओर ताक रहा था। वह भी राजा के दरबार में कुछ निवेदन करने के लिये गया था परन्तु उसके दरबार की ठाट-बाट और शोभा को देख कर चकित रह गया था और अपना विनय प्रकट करना भूल गया था। और न वह राजा के समीप गया था और न उससे कुछ प्रार्थना की। संयोग से राजा अपने मंत्री को सम्बोधित करके कहने लगा—'क्यों जी! संसार में मनुष्य को निर्वाह का सुगम उपाय किससे मालूम होता है? मंत्री ने उत्तर दिया स्त्री से। मैले कुचैले वस्त्र धारी का मुँह खुल गया और उसने तुरन्त धीरे से कहा—'यदि स्त्री सती और पतिव्रता हो, क्योंकि यदि वह सती और पतिव्रता न होगी तो पति की तबाही और बर्बादी की कारण होगी।'

राजा ने भी उसके ये वचन सुन लिये फिर उसने मुस्कराकर मंत्री से पूछा—'क्यों जी ! संसार में सबसे अधिक काम आने वाली क्या वस्तु है ?' मंत्री ने उत्तर दिया—'कृपा सागर ! धन सब से अधिक काम आने वाली वस्तु है ?' उस मनुष्य ने फिर धीरे से कहा 'यदि रुपया हाथ में हो और मनुष्य उसके काम में लाने का भेद जानता हो, अन्यथा उसका होना न होना बराबर है ! राजा ने उस साधारण मनुष्य की ओर देखा क्योंकि उसके बचनों से वह बहुत प्रसन्न हुआ था। फिर उसको अपने पास बुला कर कहा तुम कौन हो ? और किस काम के लिये मेरे पास आये हो ? सब ने अपना अपना हाल वर्णन किया है, परन्तु तुमने अब तक मुझसे कुछ नहीं कहा राजा के प्रश्नों को सुन कर उस मनुष्य ने सम्मान पूर्वक उत्तर दिया—'महाराज ! ईश्वर आपका भला करे, मैं आपके राज में रहता हूँ और विद्वान ब्राह्मण हूं पुस्तकें मेरी धन हैं, मैं अपनी स्त्री के विचार से आपकी सेवा में आया हूँ क्योंकि वह मुझको अत्यन्त प्यारी है। वह बड़ी धर्मात्मा है, मैं उसके साथ आनन्द से जीवन व्यतीत करता था, रात दिन अपनी पुस्तकों के अध्ययन में लगा रहता था, सांसारिक धन की मुझे कोई चाह नहीं थी साधुता का जीवन व्यतीत करता था। कल से वह कठिन रोग में ग्रसित होगई है। मेरे पास न खाने पीने के पदार्थ हैं न दवा दारू की सामर्थ्य है. इसलिये मैं आप से सहायता पाने के लिये आपकी सेवा में आया हूँ। मैं अपनी विद्या और बुद्धि से आपकी सेवा किया करूँगा आप मुझको इस स्त्री के लिये औषधि आदि प्रस्तुत करने के काम में सहायता दान करें। राजा ने उसके यह वचन सुन कर उसके मुख की ओर देखा उसके नेत्रों से विद्वता और चतुरता प्रगट हो रही थी। राजा ने मंत्री को आज्ञा दी कि मैं इस मनुष्य को अपने दरबार के पण्डितों में नियत करता हूँ। और तुम इसको सब आवश्यकताओं का निवा-रण कर दो। मंत्री ने तुरन्त राजा की आज्ञा पालन की उसकी धर्म-

नी के इलाज के लिये वैद्य पहुंच गया वह अच्छी होगई। वह डित राजा के दरबार में उपस्थित रहने लगा, अब उसके शरीर र चीथड़े नहीं रहे थे, परन्तु उसने अपनी पुस्तकों को कभी पृथक हीं किया और जब राजा के दरबार से उसको छुट्टी मिलती थी ो अपना समय उन्हीं पुस्तकों के पाठ में व्यतीत करता था। नम्रता मलनसार सदाचारादि गुण उस में ऐसे थे कि सब लोग उसको न्मान और प्रीति की दृष्टि से देखते थे। निर्धनता के दिनों में उसके देवता समझती थी और अब धनाढ्य होने के समय में उसे महात्मा समझने लगी। धन सम्पत्ति ने उसके रहन सहन में अवश्य परिवर्तन कर दिया परन्तु उसके स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आया, जैसे वह पहले विद्वान था वैसे ही अब भी था। हृदय व मस्तिष्क असली अवस्था में थे, केवल शरीर के ऊपर के वस्त्रादि बदल गये थे।

राजा इसकी विद्वता और चतुरता से प्रसन्न था थोड़े दिनों के पश्चात वह राज्य के किसी प्रान्त (सूबे) का गवर्नर नियत कर दिया गया। वह अपने कार्य को शुद्ध हृदय भाव से करता था इसलिये उसका काम और सभी से अच्छा होता था। दरबार के दूसरे कर्मचारी (ओहदेदार) उससे ईर्षा करने लगे। एक भिखारी को इतनी बड़ी पदवी होजाय कि वह मन्त्रियों आदि पर आज्ञा करे, यह बात उनको पसन्द नहीं थी। वह परस्पर उसके विरुद्ध कार्यवाही करने के लिये सलाहें करने लगे। निदान उनमें से एक दिन एक अवसर पर एक मनुष्य ने राजा से कहा—महाराज यह मनुष्य बड़ा जादूगर है, जादू के बल से उसने आपको अपने वश में कर लिया है। लोग कहते हैं कि वह आपके पास आने से पहले अपने घर की कोठरी में जाता है, जो हर समय बन्द रहती है। उसमें एक चांदी का छोटा सा सन्दूक है वह इसके जादू का पिटारा है। उसको खोल कर वह जादू और मंत्र यंत्र करता है फिर आपके पास आता है। यदि

यह जादूगर न होता तो इतनी जल्दी मन्त्री कभी न बन जाता। हुजूर होशियार रहें, भीख मांगने वाला कंगाल इतनी जल्दी उन्नति नहीं कर सकता। यह केवल जादू का कर्तव्य है आप इसके वश में हैं। अब वह आपका मन्त्री बन गया है, आगे ईश्वर जाने क्या करेगा। इसके जादू के पिटारे से सावधान रहना चाहिये। पहले तो राजा अपने कर्मचारी की अज्ञानता पर हँसता रहा परन्तु अब कई कर्मचारियों ने बारी बारीं से वही बात कही और उसके नातेदार तथा प्रिय सम्बन्धियों ने भी आकर उसके कान भरे तो उसके मन में कुछ सन्देह उसकी ओर से होगया।

एक दिन वह उन सब कान भरने वालों से कहने लगा मैं तुम्हारा कथन सुनते सुनते घबड़ा गया, चलो आज मैं तुम्हारे सब के आगे उसके जादू के पिटारे की तलाशी लूँगा वे सब तयार होगये और राजा उनको साथ लिये हुए उस मंत्री के घर पहुंचा। उसने बड़े आदर और सन्मान के साथ उसका स्वागत किया। यह वही पत्र था जो राजा ने उसको अपनी ओर से दिया था, राजा ने उससे कहा तुम इस समय मेरे साथ दर्बार में चलो क्योंकि एक नितान्त आवश्यक विषय मैं तुमसे सलाह लेनी है। उसने कहा यदि आप आज्ञा दें तो मैं एक क्षण के लिये एकान्त में सोच लू, फिर आपकी सभा में उपस्थित हूँ, उसका इतना कहना था कि दर्बारी आपस में आंखों से इशारा करने लगे राजा ने कहा तुम मेरे साथ शीघ्र चलो उसने सोच संकोच किया और विनीत भाव से कहने लगा—महाराज ! केवल एक क्षण के लिए मुझे एकान्त में जाने की आज्ञा दीजाय राजा के मन में नाना प्रकार के विचार उठने लगे, उसने कहा एकान्त में जाकर तुम क्या करोगे ? उसने कहा—महाराज ! केवल एक क्षण की बात है मैं इस कोठरी में बैठ कर अभी आपके राज महल की आर चलता हूँ दर्बारीं आनन्द से फूले नहीं समाते थे राजा ने कहा अच्छा तुम इस कोठरी में जाओ और मैं भी तुम्हारे

साथ साथ चलूँगा।

मंत्री डर गया, उसने कहा--महाराज ! आप कष्ट न उठावें, यह कोठरी आपके जाने योग्य नहीं है क्योंकि इसमें मेरी असली सम्पत्ति है और आपकी दृष्टि में उसका कुछ महत्व न होगा। राजा ने समझा लोगों का कहना सत्य है, यह मनुष्य अवश्य जादूगर है उसने कहा--मैं अवश्य तेरे साथ चलूँगा। उसने विवश होकर कहा आप की इच्छा फिर राजा अपने साथियों सहित उस कोठरी में प्रविष्ट हुआ। उस प्रकोष्ट में न तो दरी बिछी हुई थीं न कोई सजावट की सामग्री थी और न कोई घनादि था, उसकी दीवारों पर आलय (ताक) बने हुए थे, उनमें पुस्तकें धरी हुई थीं। एक ओर चारों वेद रक्खे हुए थे, एक ओर ब्राह्मण ग्रन्थ थे, एक ओर उपनिषद और दर्शनादि रक्खे हुए थे और एक ओर नाटक की पुस्तकें थीं। कोठरी के बीचोबीच में एक चाँदी का पिटारा भी रक्खा हुआ था। राजा के साथियों ने उसकी ओर संकेत किया। राजा ने उसके खोलने की आज्ञा दी, ब्राह्मण ने उसके ढकने को उठाया, उसके भीतर फटे पुराने कपड़ों का बंडल रक्खा हुआ था। राजा ने आश्चर्य और भय के साथ पूछा यह क्या है उसने कहा ? महाराज यह वह कपड़े है जिनको मैं निर्धनता की दशा में पहिना करता था। मैं इनको सँभाल कर रख छोड़ा है ताकि प्रति दिन इनको देख क अपनी पहली अवस्था को स्मरण रक्खूँ और इस बात को भूल जाऊँ कि मैं पहले कौन था, आपके दरबार में जाने से पहले मैं थोड़ देर के लिए इनको देख लेता हूँ और कभी कभी पहन भी लेता ताकि मुझे स्मरण रहे कि मेरी पहली दशा क्या थी। और अब क है। निर्धनता क्या होती है ? ऐश्वर्य क्या होता है ? केवल इसी व के स्मरण रखने के लिये मैंने इनको बड़े यत्न के साथ रख छो है। राजा ने आश्चर्य और प्रीति के साथ उसके वचनों को सु और फिर वहाँ से अपने दरबार में आकर उन सब चुगली क

वाले कर्मचारियों और सम्बन्धियों से कहा कि मैं आज पिटारा, जादू की कोठरी ओर जादू की वस्तु, सब कुछ देख आया। तुम सब उसको दंड देने के लिये कहा करते थे, आज मैं उसको दण्ड दूँगा। दंड यह है कि आज से वह मेरा प्रधान मंत्री नियुक्त हुआ उसकी आज्ञा मेरी आज्ञा होगी। इस कथा का तात्पर्य यह है कि अपनी प्रकृति अवस्था को कभी न भूलो। तुम आगे से आगे बढ़ते जाओगे।

.....

# क्या हिन्दू जाति जीवित रहेगी ?

## वर्णाश्रम

गतांक से आगे

जो लोग अपने बालकों को आलसी बताते हैं वह बड़ी मूर्खता करते हैं। ड़कों को कर्म करना नितान्त आवश्यक है। उनमें यह शक्ति भी बहुत होती । बड़े पुरुष उनकी बराबरी नहीं कर सकते। जितना ब्रह्मचारी पढ़ता है ना युवक या बूढ़ा नहीं पढ़ सकता। यदि लड़कों को उनकी इच्छा पर म-काज करने के लिए छोड़ दिया जाय तो दिन भर में वह किसी समय श्राम न करेंगे। बालक दिन में कभी नहीं सोते, परन्तु युवक और वृद्ध सोए ा रह नहीं सकते। जो लोग बच्चों को कर्म करने से रोकते हैं, वह उनकी ीरिक और मानसिक शक्ति की उन्नति में महा विघ्न डालते हैं। इस नितान्त आवश्यक है कि बालकों और बच्चों को श्रमशील बनाया जावे, तक कि जब वह आठ बर्ष के हो जावें तो कभी उनको बेकार न रहने जाय। यही समय है, जब बच्चों में भावी जीवन की नींव डाली जाती यदि बच्चों को अनुचित बातों में पड़ कर नष्ट होने दोगे तो सम्पूर्ण नष्ट हो जायगी।

प्राचीन समय में सब से अधिक जोर ब्रह्मचर्य पर दिया जाता था और

## ॥ मनुष्य बनो ॥

जब हम मनुजी के निर्मित नियमों पर विचार करते हैं तो हमको मानना पड़ता है कि उसके नियम किसी महान शक्ति की ओर से थे। सब से पहली बात जो हिन्दू बच्चों को कंठस्थ कराई जाती थी वह यह कि कोई किसी से उच्च नहीं सबको कर्म करना चाहिए। कर्म सब से प्रधान है। मनुष्य का जीवन केवल अपने ही लिए नहीं है वरन सृष्टि के काम काज को देख कर सब के लिए अर्पण कर देना चाहिए। यह पाँच बातें हिन्दू बालकों के मस्तिष्क में कूट कूट कर भर दी जाती थीं सम्भव है कि हमारे पाठकों के मन में सन्देह उत्पन्न हो, परन्तु यह सत्य है। माना हमारे पास दृढ़ रूप से जातीय लेख पर्याप्त नहीं हैं, परन्तु इनसे सम्बन्ध रखने वाली कथायें हमारे अतिजनों के जिह्वाग्र हैं। जो इसकी सचाई के दृढ़ प्रमाण हैं।

जब बच्चे गुरु के पास पढ़ने के लिए जाते थे, तो चाहे वह राजा के हों उन सबको एक स्थिति ग्रहण करनी पड़ती थी। यदि ब्राह्मण-पुत्र भिक्षा माँग कर गुरु के चरणों लाता था तो राजपुत्र को भी यही काम करना पड़ता था। कृष्ण और सुदामा दोनों एक ही दृष्टि से देखे जाते थे।

इस प्रकार प्रारम्भिक आयु में बच्चे माता पिता से पृथक रह कर विद्या उठाते थे। प्रातःकाल उठ कर स्नान ध्यान करके अध्ययन करना, भिक्षा त वस्तुओं को गुरू के आगे धरना, दिन रात विद्याध्ययन में व्यस्त रहना ह हमारे बालकों का कार्य था। संस्कृत में एक श्लोक है जिसका तात्पर्य है कि ब्रह्मचारी को चाहिए कि बक की तरह ध्यानी हो, श्वान की तरह शीघ्र जागने वाला हो, यती हो, तपस्वी प्रिय हो। इस श्लोक में बहुत गम्भीर तत्व भरे हुए हैं ऐसे ही गुणों से विभूषित ब्रह्मचारी जाति का उद्धार करने वाले होते हैं।

उस काल में जहाँ और जिस घर में ब्रह्मचारी भिक्षा मांगने जाता थ वह घर सौभाग्यवान समझा जाता था, मातायें मार्ग देखा करती थीं कि को ब्रह्मचारी भिक्षा के लिए आवे और जब वह आता था तो आदर के सा भिक्षा प्रदान किया करती थीं क्योंकि ब्रह्मचारी हिन्दू जाति का देवता सम जाता था।

## ।। मनुष्य बनो ।।

एक समय का बर्णन है कि स्वामी शंकराचार्य ब्रह्मचर्य के दिनो में एक
ी के घर भिक्षा मांगने गए और जिस समय द्वार पर शब्द उच्चारण किया
एक स्त्री बाहर आई और इनको देख कर रोने लगी। इन्होंने प्रश्न किया
ा क्यों रोती है ? उत्तर मिला देवता ! आज मुझ निर्धन को उपवास
ए हुए तीसरा दिन है इसका मुझे कोई दुःख नहीं पर इस बात का महा
है कि गृहस्थी के घर से ब्रह्मचारी रीता (खाली) जाय। अभी यह बार्ता
प्त भी नहीं हो पाई थी कि उसके आँगन में जो आंबले का बृक्ष था
एक आंवला गिरा उस बृद्ध माता ने झट उसको उठाकर स्वामी शंकरा-
जी को दिया और कहने लगी 'ईश्वर का धन्यवाद है कि विद्यार्थी मेरे
खाली नहीं गया।'

खिये ! ब्रह्मचार्याश्रम की उस काल में कितनी प्रतिष्ठा थी। इसी
गृहस्थी लोग इस आश्रम के स्थिर रखने में तत्पर रहा करते थे। आज
जाति में विद्या और गुण फैलाने का इस प्रकार ध्यान है। एक ओर
पिता अपने बच्चों को आलसी बना रहे हैं, उनकी पुस्तकें स्कूल तक
के लिये नौकर रखते हैं। छाते के बिना वह एक कदम चल नहीं
खाने, पीने में किंचित भेद बाल्यकाल में ही सिखा दिया जाता
के बालक छोटे कुल के नाम से घृणा रखते हैं, सत्य के स्थान
कपट आजाता है। न तप है न बल है, न विद्या का अनुराग है।
ह नहीं कहते कि तुम वर्तमान समय की विधि से लाभ न उठाओ
साथ क्या वह आवश्यक नहीं है कि श्रमशील बनने, देश और
बनने की उन्हें प्रेरणा करते रहो। हिन्दू का जीवन आलस्य और
का जीवन नहीं है। यदि उनकी प्रारम्भिक दशा दूषित है तो
आशा की जा सकती है, अज्ञान माता पिता बच्चों को नष्ट
अभी उनकी आयु १३, १४ वर्ष की भी नहीं होने पाती कि
ड़े में फँसा देते हैं। वीर्य नष्ट होगया, वीर्य के साथ बल पौरुष
नष्ट होगया। बुद्धि जाती रही, मस्तिष्क दुर्बल होगया।
इस प्रकार नष्ट होगये तो उनके साथ ही जाति का नष्ट होना

अवश्यम्भावी है। यदि विश्वास न हो तो सुशिक्षित समुदाय के चारों ओर दृष्टि पात करके देख लो। बङ्गाल में जो ब्राह्मण और कायस्थ वंश उच्च विद्वता के लिए प्रसिद्ध थे अब उनका चिन्ह तक नहीं रह गया और सब जगह हिन्दुओं के उच्च कुलों की यही दशा हो रही है।

ब्रह्मचर्य बिगड़ गया उसके साथ ही हिन्दू जाति की इमारत दुर्बल होगई जिस इमारत की नींव दूषित हो उसकी कक्षाओं के दुर्बल होने में क्या सन्देह हो सकता है। हां गृहस्थाश्रम सब आश्रमों का रक्षक और आशय दायक है यह आश्रमों में वैश्य है इसकी स्थिति पूर्णता वही है जो शरीर में पेट की है। योग के सम्बन्ध में यह विभक्ति यों है। ब्रह्मचारी को विद्या और तप के सिवा काम नहीं रहता इसको प्रत्येक के साथ बर्ताव करना, जाति के प्रत्येक कार्य में सम्मिलित होना चारो ओर दृष्टि रखना, माता पिता भाई, बन्द सारी दुनिया का ध्यान रखना पड़ता है। यहां ही आकर देखना मनुष्य किस प्रकार अपने कर्त्तव्यों को पालन करता है। ब्रह्मचारी और सन्यासी दोनों प्रधान शक्तियाँ हैं। इनकी अवस्था एक जैसी है। जहाँ अन्धकार होता है वहाँ दिखाई नहीं देता। जहां अधिक प्रकाश होता है वहां भी कुछ दिखाई नहीं देता। लोग हमारे शब्दों को पढ़ कर भ्रम में न फँसें, केवल असल उद्देश्य को सन्मुख रक्खें गृहस्थ ही ऐसा आश्रम है जहां श्रम के दृश्य देखने में आते हैं। घर में स्त्री मुस्कराते हुए पति को प्रेम से रिझा रही है। माता पिता उसपे बहुत कुछ आशा रखते हैं, बालक उसके दामन से लटक कर तोतरे बचन सुनाते हैं, पशु भिखारी गुरुद्वारा शिवालय अनाथालय सब उसकी सहायता की इच्छा करते हैं। यहाँ ही आकर देखना है कि वह किस प्रकार काम करता है यहाँ ही आकर उसके धर्म की परीक्षा होती है। रणक्षेत्र से भागने वाले अर्जुन को कृष्ण भगवान कायर और नर्कगामी बताते हैं वह लड़ने और भीष्म पितामा व द्रोणाचार्य आदि के मरने से इनकार करता है, आप ही कहिये क्या किया जाय ऐसे ही अवसरों पर धर्म का विचार होता है वह कुरुक्षेत्र वास्तव में तुम्हारा गृहस्थाश्रम है। इसके विशेष कर्तव्यों का व्याख्या महा निर्वाणतन्त्र नामक पुस्तक में की गई है।

( १ ) गृहस्थी भक्त हो, ईश्वर के ज्ञान को अपने जीवन का उद्देश्य समझे, सदा कर्म करता रहे, आलस से विरक्त रहे, कर्म के फल की इच्छा कभी न करे। जो कर्म करे उसे ईश्वर अर्पण करदे।

( २ ) माता पिता को ईश्वरवत् सम्मान के योग्य समझे। यदि माता-पिता प्रसन्न हैं तो समझले कि ईश्वर भी प्रसन्न होगा। गृहस्थाश्रम में रह कर पहले माता पिता को भोजन करादे फिर आप भोजन करे।

( ३ ) अपनी स्त्री को कभी दुर्वचन न कहे। दुख व शोक में कभी भूल कर भी स्त्री पर क्रोध न करे।

( ४ ) वस्त्र, आहार, शारीरिक श्रंगारादि गृहस्थी के लिये वर्जित हैं, उसका मन और हृदय शुद्ध हो कर्म के लिये तैयार रहे।

( ५ ) शत्रुओं के मध्य में वीरता का बर्ताव करे उनके मुकाबले में संकीर्णता न करे यह गृहस्थ का धर्म है। ऐसा कभी न करे कि एक कोने में बैठ कर अश्रुपात करे। अपने मित्रों आदि से प्रीति का वर्ताव करे।

( ६ ) घृणित बातों से बचा रहे अपनी प्रसंशा व बड़ाई के शब्द भूल कर भी मुख से न निकाले। यदि किसी ने कोई भेद की बात बताई हो तो भूल कर उसे प्रगट न करे।

( ७ ) यदि कोई काम बिगड़ जाय तो किसी पर क्रोधित न हो न किसी को भेद बताबे धनाढ्यता ओर निर्धनता की बात केवल अपने मन में रक्खे। यहाँ तक वर्णन करें। यह किंचित श्लोकों के भावार्थ हैं। गृहस्थी को धन कमाना आवश्यक है यदि वह झूठे वैराग्य के ढकोसले में पड़ कर मिथ्या मार्ग में जारहा है तो महा अधम और नर्की है महा निर्वाणतन्त्र आगे चल कर कहता है—

'वह हर प्रकार से धन और मर्यादा का लाभ करे परन्तु आवश्यकता के समय उनके त्याग के लिये तैयार रहे, विधान करे, जुआ न खेले, मिथ्या न बोले और दूसरों के दुख का कारण न हो।

गृहस्थ के लिये पंच यज्ञों का करना आवश्यक है पैत्र सेवा, अतिथि-सेवा तथा इसका धर्म माना गया है।

## "मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

| | | |
|---|---|---|
| १—प्रकाशन का स्थान | : | अलीगढ़ |
| २—प्रकाशन अवधि | : | मासिक |
| ३—मुद्रक का नाम | : | श्रीमती सुधा मीतल |
| क—राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| ख—पता | : | शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ । उत्तर प्रदेश |
| ४—प्रकाशक का नाम | : | श्रीमती सुधा मीतल |
| राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| पता | : | शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ |
| ५—सम्पादक का नाम | : | श्री श्रीमती सुधा मीतल |
| राष्ट्रीयता | : | भारतीय |
| पता | : | शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़ |
| ६—स्वत्वाधिकारी | : | श्रीमती सुधा मीतल |
| संरक्षक | : | परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज |

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है ।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG-28


# पुस्तकें

हमारे यहां

**महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज**

**कृत**

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।
पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—
कार्यालय
**मनुष्य बनो**
शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)


ग्राहक सं०

श्री


सम्पादक— श्रीमती सुधा मीतल
व्यवस्थापक व प्रकाशक—
श्रीमती सुधा मीतल,
शिव भवन, लेखराज नगर
अलीगढ़।

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh